त्यौहार गुड़ियों का

सुमन सिंह

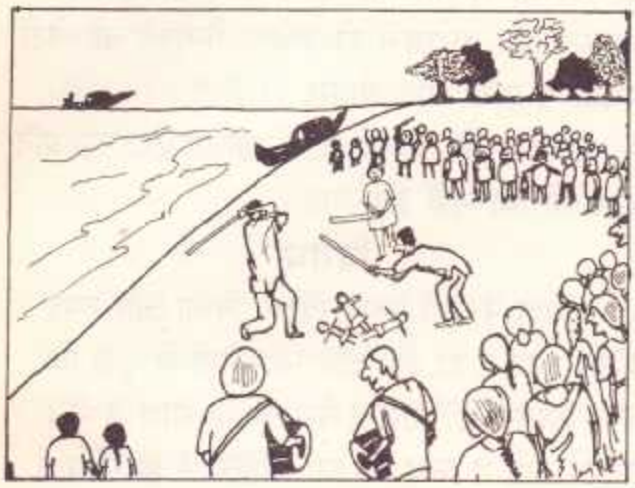

उत्तरी भारत के कुछ भागों में 'नागपंचमी' त्यौहार मनाने का एक अजीब तरीका है। उस दिन विवाहित और अविवाहित औरतें कपड़ों की गुड़ियां बनाती हैं। फिर उन्हें एक टोकरी में रख कर नदी या तालाब के किनारे ले जाया जाता है। त्यौहार में लड़के और पुरुष भी भाग लेते हैं। उनकी भूमिका यह रहती है कि वे उन गुड़ियों को लकड़ी की डंडी से खूब पीटते हैं। फिर स्त्री-पुरुष दोनों स्नान कर वापस आ जाते हैं।

देखने में त्यौहार मनोरंजनपूर्ण लगता है। लेकिन यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि इसके ज़रिए पुरुषों द्वारा स्त्रियों की पिटाई को धार्मिक और सामाजिक मान्यता दी गई है। इसकी जड़ में स्त्रियों को नीचा दिखाने एवं अपमानित करने की भावना है। इसमें स्त्रियों की भी बराबर की भागीदारी है। गुड़ियां वही बनाती हैं और पुरुषों को देती हैं कि इन्हें पीटो।

औरतों के निचले दर्जे की छाप हमारे रीति-रिवाजों और कई त्यौहारों में साफ दिखाई देती है। ऐसा ही है एक त्यौहार गुड़ियों का। आज जब हम औरत को पुरुष के बराबर का दर्जा दिलाने की लड़ाई लड़ रही हैं तो क्या ऐसे त्यौहार और रीति-रिवाज आंखें मूंद कर मनाने चाहिए? नहीं। इन पर और सभी संबंधित मुद्दों पर खुल कर चर्चा करने की ज़रूरत है।

संपादिका

यह त्यौहार शहरों में अब कम ही मनाया जाता है। लेकिन कई पिछड़े हिस्सों में जहां अशिक्षा और अज्ञानता है यह अभी भी उत्साह से मनाया जाता है। यह उन तमाम त्यौहारों में से एक है जिसकी जड़ में लड़की और लड़के का भेदभाव होता है।

करवा-चौथ में स्त्रियां व्रत रखकर पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं। रक्षा बंधन, होली, दिवाली के बाद दुइज पर भाई को राखी एवं टीका किया जाता है। इसके पीछे भावना यह रहती है कि लड़की कमज़ोर है, उसे भाइयों का सहारा चाहिए। पुत्र का महत्व मानने के लिए दिवाली के पहले अष्टमी के दिन 'अहोई' त्यौहार मनाया जाता है। इसे वही स्त्रियां मना सकती हैं जिन्हें पुत्र-रत्न प्राप्त है। यहां तक कि पूजा-घर में जहां इसकी पूजा की जाती है, परिवार की लड़कियों को भीतर आने की अथवा बाहर से देखने की भी मनाही है। केवल पुत्रों की मांएं इस पूरी क्रिया में भाग लेती हैं।

इस त्यौहार से साफ ज़ाहिर है कि स्त्री का मान सम्मान इसी में है कि वह पुत्र की मां बने। इसीलिए स्त्रियां भी पुत्र की ही कामना करती हैं। हमारे यहां पुत्र-रत्न की प्राप्ति के लिए 1002 के करीब व्रत-उपवास हैं। □